International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(5): 197-220

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(5): 197-200
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-07-2019
Accepted: 17-08-2019

डा0 बिपिन कुमार
विषय विशेषज्ञ ज्योतिर्विज्ञान विभागए लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर, प्रदेश भारत।

Correspondence
डा0 बिपिन कुमार
विषय विशेषज्ञ ज्योतिर्विज्ञान विभागए लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर, प्रदेश भारत।

ज्योतिष तत्त्व विमर्श

डा0 बिपिन कुमार

सार
भारतीय ज्योतिष पुरूषार्थ चतुस्टय की प्राप्ति का साधन है।इससे धर्म अर्थ काम और मोक्ष चारों पुरूषार्थ की प्राप्ति होती है। इस शोध प्रबन्ध में भारतीय ज्योतिष का परिचय, उद्देश्य ज्योतिष से प्राप्त फल, ज्योतिष के अंग और उनका परिचय व्यापक रूप से वर्णित है। भारतीय ज्योतिष से लेकर आधुनिक समय तक ज्योतिष के स्वरूप का परिचय भी इस शोध पत्र में वर्णित है।

कूट शब्दः ज्योतिष, सिद्धान्त, संहिता, होरा

प्रस्तावना
ग्रहों की गति स्थिति आदि का पृथ्वी पर स्थित प्राणिजगत से गहरा सम्बन्ध है, सूर्यादि ग्रहों की गति स्थिति का प्राणियों पर पड़ने वाले प्रभाव का कालनिर्धारण जिस शास्त्र से होता है उसे ज्योतिषशास्त्र कहते है। ज्योतिष शब्द ''द्युत दीप्तौ'' धातु में इसिन् प्रत्यय के संयोग से बना है। ''द्योत्यते प्रकाशयते इति ज्योतिः'' नृसिंह दैवज्ञ का मत है कि ''ज्योतिषिं ग्रह नक्षत्राणयधिकृत्य कृतो ग्रंथो ज्योतिषम् ''अर्थात् आकाशमण्डल में स्थित ज्योति सम्बन्धी विषय ही ज्योतिष है। ''शासनात् शास्त्रम्'' अर्थात करणीय–अकरणीय अथवा कर्तव्य–अकर्तव्य के विषय में जो आदेश दे वही शास्त्र है। किसी विशिष्ट विषय या पदार्थसमूह से सम्बन्धित वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह करके रखा गया हो, शास्त्र कहलाता है। शास्त्र का अर्थ विज्ञान है 'शास्त्र' शब्द 'शासु अनुशिष्टौ' से निष्पन्न है जिसका अर्थ 'अनुशासन या उपदेश करना' है। किसी भी विषय, विद्या अथवा कला के मौलिक सिद्धान्तों से लेकर विषय–वस्तु के सभी आयामों का सुनियोजित, सूत्रबद्ध निरूपण शास्त्र है। हमारे यहाँ शास्त्र की परिभाषा इस प्रकार की गई है–''शास्ति च त्रायते च। शिष्यते अनेन।'' अर्थात् जो शिक्षा अनुशासन प्रदान कर हमारी रक्षा करती है, मार्गदर्शन करती है, कभी–कभी हमारी उँगली पकड़कर हमें चलाती है, उसे 'शास्त्र' कहा गया है। इस प्रकार ज्योतिष में ग्रह नक्षत्र और राशियों के सभी आयामो का सुनियोजित, सूत्रबद्ध निरूपण किया जाता है इसलिए ज्योतिष को शास्त्र कहना सर्वथा उचित है।
ज्योतिष विज्ञान भी कहा जाता है। किसी भी विषय के क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित ज्ञान को विज्ञान कहते है। ''विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानं'' अर्थात किसी भी विषय के विविध और विशिष्ट पक्षों का क्रमबद्ध अध्ययन ही विज्ञान है। ज्योतिष में भी ग्रहों के विशिष्ट और विविध पहलुओं का क्रमबद्ध अध्ययन होता है इसलिए इसे विज्ञान कहा जा सकता है। ज्योतिष विज्ञान है। विज्ञान के दो भाग हैं एक भौतिक, दूसरा निष्पत्ति या यौगिक। ज्योतिष में ग्रहो की गति स्थित्यादि भौतिक विज्ञान है और ग्रहगति का प्राणिजगत पर प्रभाव इसकी निष्पत्ति का भाग है। ग्रहगणित की पारिणामिक प्रतिक्रिया या प्रयोग ही फलित है। ग्रहगणित क्रिया है और फलित उसकी प्रायोगिक प्रतिक्रिया है, ग्रहगणित बृक्ष है तो फलित उसका वृक्ष का फल है। गणित अंगी है और फलित उसका अंग है। दोनो में ''अंगाङ्गीनोरभेदात्'' अर्थात अंग और अंगी में अभेद सम्बन्ध है। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र भी है और विज्ञान भी है।
अंग्रेजी में ज्योतिषशास्त्र को Astrology कहा जाता है यह शब्द ग्रीक भाषा के ेजतवद और स्वहपं से मिलकर बना है। Astron का अर्थ तारों का समूह, और स्वहपं का शाब्दिक अर्थ अध्ययन अर्थात Astrology का शाब्दिक अर्थ तारों से संबंधित अध्ययन। पाश्चात्य ज्योतिष में Astrology के 2 भेद हैं। 1–म्वेजमतपब 2– मगवजमतपब। इसोटेरिक एस्ट्रोलॉजी में ग्रहों के आधार पर प्राणियों के दार्शनिक पक्ष का अध्ययन करते है इसमे आत्म तत्त्व का विचार किया जाता है। इक्जोटेरिक एस्ट्रोलोजी के अंतर्गत प्राणियों के भौतिक पक्ष का अध्ययन किया जाता है।
ज्योतिष पिण्ड और ब्रह्माण्ड के मध्य अन्तर्सम्बन्ध को समझने का शास्त्र है। 'यत पिण्डे तत ब्रह्माण्डे' जो पंचमहाभूत अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल और आकाश शरीर मे है वही ब्रह्माण्ड में स्थित है।

दोनो में तात्त्विक समानता होने के कारण एक दूसरे को प्रभावित करते है। वैदिक मनीषियों ने अपने योगज प्रत्यक्ष द्वारा अपने शरीर के अन्दर ही ब्रह्माण्ड तथा सौर मण्डल के दर्शन कर लिए और ग्रह नक्षत्रों के रहस्य को रचा। आचार्य लगध ने कहा है कि वेद यज्ञ में अभिप्रवृत्त है, यज्ञ काल (समय) पर आधारित होते है, इसलिए जो इस कालविधानशास्त्र नामक ज्योतिष को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् ।।[1]

ज्योतिष काल (समय) के अध्ययन का विज्ञान है, इस शास्त्र में समय को पुरुष के रूप में ''कालपुरुष'' परिकल्पित किया गया है। ग्रह नक्षत्रों के संयोग से निराकार काल साकार हो जाता है। ज्योतिष सृष्टि का नियामक विज्ञान है। इसमें अविभाज्य काल को व्यावहारिक रूप से घटी–दिन–मास–संवत् और युगादि में विभाजित किया गया है।कणाद सिद्धान्तचन्द्रिका में कहा गया है कि ''सर्वोत्पत्ति निमित्तं जगदाधारश्च कालः ''अर्थात् यह काल सर्व उत्पत्ति का निमित्तकारण एवं विश्व का आधारतत्त्व कहा गया है। ज्योतिष पूर्वजन्म में अर्जित शुभ–अशुभ कर्म और तज्जन्य फल को वैसे ही प्रकट करता है जैसे अंधकार में रखे हुए पदार्थों को दीपक प्रकट या प्रत्यक्ष करता है। वराहमिहिर का मानना है कि अन्धकार मे जिस तरह दीपक वस्तुओं को प्रकाशित करता है, उसी तरह यह ज्योतिषशास्त्र प्रत्येक जीव के पूर्वजन्मार्जित शुभ या अशुभ कर्मो के परिणामों को बताता हैः–

यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मणः पंक्तिम्,
व्यञ्जयति शास्त्रमेतत्, तमसि द्रव्याणि दीप इव ।।[2]

बराहमिहिर के इसी श्लोक से यह निर्धारित होता है कि ज्योतिष में स्थित ग्रह फलाफल के नियामक नही है अपितु सूचक हैं। अर्थात ग्रह किसी को सुख या दुख नही देते आपितु सुख दुख की सूचना देते हैं। ज्योतिष का कर्मफल से गहरा सम्बन्ध है। भारत की सनातन परम्परा में आत्मा को अमर माना गया है, आत्मा को कर्मफल का संवाहक माना गया है, और सृष्टि के रचयिता को भी माना गया है। कर्म 3 प्रकार के हैंः–1–संचित, 2–प्रारब्ध और 3–क्रियमाण। वर्तमान क्षण से पूर्व जो भी कर्म किये गए हैं चाहे वे पूर्वजन्म के ही कर्म हों, वह संचित कर्म कहलाते हैं। पूर्व में किये हुए जिन कर्मो का भोग वर्तमान काल मे किया जा रहा है वह प्रारब्ध कहलाता है। जो कर्म वर्तमान समय मे किये जा रहें हैं और जिनका फल भविष्य में मिलना है वे क्रियमाण कर्म कहलाते हैं। जीव के प्रारब्ध कर्म की अभिव्यक्ति ही ज्योतिष है। प्रारब्ध कर्मों के अनुरूप ही जातक की जन्मकुण्डली निर्धारित होती है। प्राणान्त होने पर आत्मा जब एक शरीर का त्यागकर दूसरे शरीर मे प्रवेश करता है तो आत्मा इन्ही संचित और क्रियमाण कर्मो की संवाहक होती है। यही प्रारब्ध कर्म ही संस्कार या प्रवृत्ति कहे जाते हैं। हानि–लाभ, सुख–दुख, जय–पराजय, जीवन–मरण आदि का कर्म से ही सम्बन्ध है। प्रारब्ध कर्मो के अनुरूप हमारा वर्तमान है संचित कर्म के अनुरूप भविष्य होगा और क्रियमाण के अनुरूप अगला जन्म होगा। सबकुछ कर्म से ही सम्बद्ध है। इस प्रकार ज्योतिष सूचना का शास्त्र है विधान का नही। चिरन्तन जीवन से सम्बद्ध सत्य का विश्लेषण करना ही इसका प्रमुख उद्देश्य है। पारमार्थिक रूप से ज्योतिष का उद्देश्य अन्तर्ज्योति को जाग्रत करना है, अन्तर्ज्योति जागृत होने पर अज्ञान का अंधकार स्वतः मिट जाता है और परब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है।

ब्रह्माण्ड के सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों के भ्रमण में जो नियम कार्य करता है वही नियम व्यक्तित्त्व में स्थित सौर जगत की गतिशीलता में कार्य करता है इसीलिए आकाश में स्थित सप्त ग्रह ही आंतरिक व्यक्तित्व के प्रतीक हैंः–जैसे सूर्य–आत्मा, चंद्रमा–मन, मंगल–सत्व, बुध–वाणी, गुरु–विवेक, शुक्र–मद, शनि–श्रम और संवेदना का प्रतीक है। यह शरीरचक्र ही कक्षावृत्त है। 12 राशियाँ भी वाह्यय व्यक्तित्व का प्रतीक हैः–मेष–सिर या मस्तक, वृष–मुख, मिथुन–कंधे, कर्क–हृदय, सिंह–पेट, कन्या–कमर, तुला–वस्ति (पेडू), वृश्चिक–जननांग, धनु–जंघा, मकर–घुटना, कुम्भ–पिण्डलियां और मीन–एडी का प्रतीक है। इस प्रकार मनीषियों ने योगशक्ति के द्वारा आभ्यन्तर सौर जगत का पूर्ण दर्शनकर आकाशमण्डल के सौर जगत के नियम निर्धारित किये।

वेद इस जगत के आधार हैं, यह सामयिक या स्थानिक न होकर सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं। वेद महावाक्यों की समष्टि और यज्ञों के प्रतिपादक हैं, इनका कोई प्रतिपादक न होने के कारण अपौरुषेय हैं। वैदिक वाङ्गमय के श्रवण, मनन और निदिध्यासन से मुक्ति मिलती है, इसके छह अंग कहे गए हैंः– 1. शिक्षा, 2–कल्प, 3–व्याकरण, 4–निरुक्त, 5–छन्द और 6–ज्योतिष। मंत्रों के उचित उच्चारण के लिए शिक्षा, कर्मकाण्ड और यज्ञीय अनुष्ठान के लिए कल्प, शब्दों के रूप ज्ञान के लिए व्याकरण, अर्थज्ञान के निमित्त शब्दों के निर्वचन के लिये निरुक्त, वैदिक छंदों के ज्ञान के लिए छन्द, और अनुष्ठान के उचित काल निर्धारण के लिए ज्योतिष का उपयोग स्वीकृत है। भास्कराचार्य द्वितीय ने उचित ही कहा है :–

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चाक्षुषी, श्रोतमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ।
या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका, पाद पद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः ।।[3]

ज्योतिष काल (समय) के प्रबन्धन का विज्ञान है। काल प्रागनुभविक है यह विशुद्ध संवेदन रूप है, यह अनन्त, अखण्ड और अविभाज्य है। काल का आयाम पूर्वापरभाव है। जर्मन दार्शनिक इमैनुअल काण्ट ने काल को आनुभविक दृष्टि से यथार्थ और अतीन्द्रिय दृष्टि से अयथार्थ कहा है। भारत के अद्वैत दार्शनिक शंकराचार्य का मत है कि देश (स्थान) की व्यापकता काल (समय) के सापेक्ष है, जो देश में सीमित है, वह काल मे भी सीमित है। कालगणना का आधार ग्रहों की गतिशीलता है। बृहस्पति का मत है कि ग्रहों के अधीन समस्त संसार है, ग्रहों के अधीन समस्त मनुष्य होते हैं, काल का ज्ञान भी ग्रहों के अधीन है, और ग्रह ही कर्मफल देने वाले हैं।

ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीनाः नरावराः, कालज्ञानं ग्रहाधीनं ग्रहाः कर्मफलप्रदाः।[4]

वैदिक ऋषियों को मंत्रद्रष्टा कहा गया है उन्हें वैदिक मंत्र का कर्ता नही कहा गया है। ''ऋषयो मंत्रद्रष्टारः न कर्तारः''। ऋषि द्वारा प्रतिपादित शब्द के पीछे अर्थ अनुसरण करते हैं।

लोकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।[5]

ज्योतिष वेद का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है जैसे मयूर की शिखा महत्त्वपूर्ण होती है, सर्प में मणि महत्त्वपूर्ण होती है वैसे ही वेदाङ्ग शास्त्र में ज्योतिष सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होकर प्रतिष्ठित है।

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा
तद्वत वेदाङ्ग शास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम् ।।[6]

इसीलिए ज्योतिष का महत्व सबके लिए है वराहमिहिर ने कहा है कि

वनं समाश्रिता एऽपि निर्ममा निष्परिग्रहाः।
अपि ते परि पृच्छन्ति ज्योतिषां गतिकोविदम्[7] ।।

जिन्होंने गृहस्थाश्रम का परित्याग कर दिया है, वन में ही निवास करते है, अहंकार ममता से मुक्त और अपरिग्रह वाले हैं ऐसे महर्षिजन भी ग्रह–नक्षत्रों की गति जानने वालों ज्योतिर्विदों से अपने विषय मे पूछते है।
वराहमिहिर का तो यहां तक कहना है कि ज्योतिष जानने वाले को नरक नही जाना पड़ता ।

न सांवत्सरपाठी च नरकेषूपपद्यते
ब्रह्मलोके प्रतिष्ठां च लभते दैवचिन्तकः।।[8]
अन्यानि शास्त्राणि विनोदमात्रं न किंचिदेशां भुवि दृष्टिमस्ति
चिकित्सितज्योतिषं मंत्रवादाः पदे पदे प्रत्ययमावहन्ति।।[9]

अन्य शास्त्र तो विनोद मात्र है इनका भूमि पर कोई दृष्टांत नही प्राप्त होता, किंतु चिकित्साशास्त्र, ज्योतिष और मंत्रशास्त्र तो पद पद पर विस्वास दिलाने वाले हैं।
भास्कराचार्य ने कहा है कि

तस्माद्द्विजैरध्ययनीयमेतत् पुण्यं रहस्यं परमं च तत्त्वम्।
यो ज्योतिषं वेत्ति नरः स सम्यक् धर्मार्थकामान् लभते यशश्च ।।[10]

द्विजजनों को इस पुण्य और रहस्यमयी ज्योतिषशास्त्र के तत्त्व का अध्ययन करना चाहिये, जो ज्योतिष को जान लेता है उसे धर्म, अर्थ और काम तीनो पुरुषार्थोंकी प्राप्ति हो जाती है।
श्रीपति ने सिद्धान्तशेखर और वशिष्ठ ने बृहदवशिष्टसिद्धांत में तो ज्योतिष जानने वाले को चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति हो जाती है ऐसा कहा गया है।

अध्येतव्यं ब्रह्माणेरेव तस्माज्ज्योतिः शास्त्रं पुण्यमेतद् रहस्यम्,
एतद्बुद्धवा सम्यगाप्नोति यस्मादर्थ धर्म मोक्षमग्रयं यशश्च।।[11]
विधाता लिखिता याऽसौ ललाटे अक्षरमालिका,
दैवज्ञस्तां पठेद्व्यक्तं होरानिर्मल चक्षुषा ।।[12]

विधाता ब्रह्मा जो मनुष्य के ललाट अर्थात भाग्य पर अक्षर लिख देते हैं उसको ज्योतिर्विद होराशास्त्र के निर्मल आंखों द्वारा पढ़ने का प्रयास करते हैं अब प्रश्न उठता है कि विधाता किसी प्राणी के भाग्य में क्या लिखते हैं इसे वराहमिहिर के लघुजातक से समझना चाहिए जहां यह कहा गया है कि मनुष्य के पूर्व जन्म में अर्जित शुभ अशुभ कर्मफलों का ज्ञान ही ज्योतिष होता है अर्थात् विधाता मनुष्य के भाग्य में उसके पूर्वजन्म में अर्जित शुभ–अशुभ कर्म का फल लिखते हैं उसे ही ज्योतिर्विद होराशास्त्र या ज्योतिर्विज्ञान कहते हैं ।
भारतीय ज्योतिष में वराहमिहिर के समय तक ज्योतिष के 3 भेद थेः–1–सिद्धांत, 2–संहिता,और 3– होरा । जैसे सृष्टि त्रिगुणात्मक (सत्त्व, रजस, तमस) है वैसे ही ज्योतिष त्रिस्कन्धात्मक (सिद्धान्त, संहिता और होरा) थी।

सिद्धान्तसंहिताहोरा रूपस्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुः ज्योतिषशास्त्रमनुत्तमम् ।।[13]

बाद के ग्रंथों में ज्योतिष के 5 भेद हो गये इसमे सिद्धान्त, संहिता होरा के अलावा 4– केरलीय ज्योतिष, और 5– शकुन ज्योतिष स्वीकृत हुए।

पंचस्कंधमितं शास्त्रं होरागणितसंहिता,
केरलिः शकुन्नश्चेति ज्योतिषशास्त्रमुदीरितम्।। [14]

यह कह तो दिया गया किन्तु वस्तुतः शकुन, केरलीय, प्रश्न, मुहूर्त, अंगविद्द्या, स्वर, वास्तु, ताजिक रमल इत्यादि सब संहिता के अंतर्गत आते है।
प्रश्नमार्ग में ज्योतिष के 6 भेद बताए गये हैंः–

जातकगोलनिमित्तप्रश्नमुहूर्ताख्यगणित नामानि।
अभिदधतीह षडंगान्याचार्या ज्योतिषे महाशास्त्रे ।।[15]

1–जातक, 2– गोल, 3–शकुन,4–प्रश्न, 5–मुहूर्त, 6–गणित ये 6 अंग ज्योतिष के माने गए है।
समकालीन भारतीय ज्योतिषी के.एस. कृष्णमूर्ति ने ज्योतिष के 10 भेद किये है।
1–Medical Astrology चिकित्सा ज्योतिष 2–Astro meteorology मौसम ज्योतिष 3–Mundane or Judicial astrology संहिता ज्योतिष 4–Natal Astrology फलित या जातक ज्योतिष 5–Horary Astrology प्रश्न ज्योतिष 6–Electional Astrology मुहूर्त ज्योतिष 7–Kabla Astrology आत्मतत्त्व की चेतना को जागृत करने की ज्योतिष 8–Kerala Astrology केरलीय ज्योतिष 9–Omens Asteology सगुन ज्योतिष। ज्योतिर्निबन्धकार की पंचस्कन्ध की और कृष्णमूर्ति की 9 स्कन्ध की अवधारणा अधिक स्वीकार्य नही है । अभी भी ज्योतिष को 3 भाग ही प्रचलन सर्वाधिक प्रचलन में है।
सिद्धांत ज्योतिष–त्रुटिकाल से लेकर प्रलय काल तक कि गणना, कालो के मान (नवविध कालमानः– ब्रह्ममान, दिव्यमान, पितृमान, प्रजापतिमान, गुरुमान, सौरमान, सावनमान, चान्द्रमान और नाक्षत्रमान–[16] एवं भेद, ग्रहों का चारः–मध्यम गति, मन्दगति, स्पष्टगति स्थित्यादि निरूपण, व्यक्त और अव्यक्त त्रिकोणमितीय गणित का उपपादन, उससे सम्बन्धित प्रश्न और उसके उत्तर का संकलन, पृथ्वी सहित सभी ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति एवं वेध प्रक्रिया द्वारा ठीक ठीक ज्ञान करने के लिए यन्त्रादि के निर्माण की विधि का जिस शास्त्र में वर्णन मिलता है उसे सिद्धान्त कहते हैं। सिद्धान्तशिरोमणि में सिद्धान्त ज्योतिष को परिभाषित किया हैः–

त्रुत्यादि प्रलयान्त काल कलना मान प्रभेदः क्रमा–
च्चारश्च द्युसदां द्विधा च गणितं प्रश्नास्तथासोत्तराः।
भूधिष्ण्यग्रह संस्थितेश्च कथनं यन्त्रादि यत्रोच्यते,
सिद्धान्तः स उदाहृतोऽत्र गणितस्कन्धप्रबन्धे बुधैः ।।[17]

सिद्धान्त स्कन्ध को व्यवहार में गणित स्कन्ध कहा जाता है इस सिद्धान्त के भी 3 विभाग हैः– 1–सिद्धान्त, 2– तन्त्र और 3–करण। इस क्रम में जिसमे कल्पादि से कालगणना, अहर्गण और मध्यम ग्रह का आनयन किया जाता है उसे सिद्धान्त कहते हैं। पंचसिद्धान्तिका, सिद्धान्तशिरोमणि और सिद्धान्ततत्वविवेक प्रमुख सिद्धान्त ग्रंथ है। युगादि से कालगणना अहर्गणानयन जहां किया जाता है उसे तन्त्र कहा जाता है। शकादि से जहां कालगणना और अहर्गण का आनयन किया जाता है उसे करण कहते हैं। ग्रहलाघव और केतकरीयग्रहगणित करण ग्रन्थ हैं।

संहिता ज्योतिष–संहिता स्कन्ध में ग्रह नक्षत्रों के द्वारा भूपृष्ठ पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन एवं प्राकृतिक आकाशीय घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। पंचांगविषयक–तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण के समूह पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, राष्ट्रविषयक–उत्पात, भूकंप, वर्षा, और बाजार के भाव का नगर, क्षेत्र, प्रदेश, देश, पर प्रभाव, व्यक्ति विषयक–यात्रा, शकुन, स्त्री पुरुष लक्षण आदि का विचार भी संहिता ज्योतिष के अन्तर्गत किया जाता है। बृहत्संहिता, गर्गसंहिता, वशिष्ठ संहिता आदि प्रमुख संहिता ग्रंथ हैं।
वराहमिहिर ने संहिता स्कन्ध को परिभाषित करते हुए कहा है संहिता में ज्योतिष के सभी भाग समाहित हैः–

ज्योतिःशास्त्रमनेकभेदविषयं स्कंधत्रयाधिष्ठितम्
तत्कात्स्र्योपनयनस्य नाम मुनिभिः संकीर्त्यते संहिता ।
स्कन्धेऽस्मिन् गणितेन या ग्रहगतिस्तंत्राभिधानस्त्वसौ
होराऽन्योअंगविनिश्चयश्च कथितः स्कन्धस्तृतीयोऽपरः ।।[18]

इस प्रकार संहिता स्कन्ध में संवत्सरफल कथन, ग्रहयुति, मेघलक्षण, वृष्टि विचार, उल्का, भूकम्प, शकुन, भूमिशोधन, वास्तुशास्त्र और ग्रहण का चराचर जगत पर सामूहिक प्रभाव का अध्ययन का विचार किया जाता है। इस विषय मे गर्ग का मत है :–

गणितं जातकं शाखा यो वेत्ति द्विजपुंगव,
त्रिस्कन्धज्ञो विनिर्दिष्टः संहितापारागश्च सः।।

नक्षत्रकूर्म विचार, अगस्त्योदय, प्रतिमा लक्षण, वृक्षायुर्वेद, ग्रह के उदयास्त, और दकार्गल का विचार संहिता ज्योतिष में किया जाता है।

होरा ज्योतिष–जन्म से लेकर मृत्यपर्यन्त जन्मकाल अथवा प्रश्नकाल की ग्रहस्थिति के आधार पर फलित का विचार होरा स्कन्ध के अंतर्गत होता है।इसका दूसरा नाम फलित या जातक शास्त्र है। होरा शब्द अहोरात्र का लघुस्वरूप है, अहोरात्र शब्द के पूर्व का 'अ' और अन्त का 'त्र' अक्षर काटने से होरा शब्द बनता है। अंग्रेजी भाषा मे प्रयुक्त Hour शब्द होरा से ही उधार लिया हुआ है। राशि के आधे मान को होरा कहते हैं ''होराराश्यर्द्धमुच्यते''। अहोरात्र शब्द का अर्थ दिन और रात होता है,जैसा कि वराहमिहिर ने कहा है:–

होरेत्यऽहोरात्रविकल्पमेके वांछन्ति पूर्वापरवर्ण लोपात,
कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादिर्यत्तस्य पंक्तिं समभिर्व्यनक्ति।।[19]

जन्मकालीन समय और स्थान के आधार पर कुण्डली का निर्माण होता है जन्मकुण्डली के नक्षत्र राशि और ग्रह के आधार पर शुभ अशुभ फल विवेचन होता है। जातक, ताजिक, प्रश्न आदि ज्योतिष इसी होराशास्त्र में समाहित हैं। पूर्व जन्म के अर्जित कर्म के अनुरूप जातक की कुण्डली में ग्रह नक्षत्र राशियाँ स्थित होती है। इसके आधार पर मानव जीवन के सभी पक्षो का निर्धारण होता है। लोकप्रियता के कारण होराशास्त्र ज्योतिष की पहचान बन चुका है। होराशास्त्र के ग्रंथ बृहज्जातक, जातकपातिजात और ताजिकनीलकण्ठी आदि हैं।

सन्दर्भ

1. (वेदाङ्ग ज्योतिष श्लोक 3)
2. (लघुजातक 1/3)
3. (सिद्धान्तशिरोमणि 1/10
4. (बृहस्पतिसंहिता 1/6)
5. उत्तररामचरित 1/10
6. (वेदाङ्ग ज्योतिष श्लोक 4)
7. (बृहत्संहिता 2/8)
8. (बृहत्संहिता 2/28)
9. (मुहूर्तचिन्तामणि पीयूषधारा टीका)
10. सिद्धान्तशिरोमणि 1/12
11. (बृहद वशिष्ठ सिद्धांत 1/10)
12. (सारावली 2/1)
13. (नारद संहिता 1/4)
14. ज्योतिर्निबंधावली पृष्ठ 84
15. (प्रश्नमार्ग 1/6)
16. सूर्यसिद्धान्त मानाध्याय 1
17. (सिद्धान्तशिरोमणि 1/6)
18. (बृहत्संहिता 1/9)
19. (बृहज्जातक 1/3)